जनसत्ता

जनसत्ता, दिल्ली, 10 अक्तूबर, 2007 7

यूपीयू से मिली सूचना के मुताबिक अंतरराष्ट्रीय पत्र लेखन प्रतियोगिता में मलेशिया की 14 वर्षीय लड़की जी ई लीं ने प्रथम पुरस्कार पर कब्जा जमाया। दूसरा

जलेस का राष्ट्रीय सम्मेलन धनबाद में

जनसत्ता ब्यूरो

नई दिल्ली, 9 सितंबर। जनवादी लेखक संघ का सातवां राष्ट्रीय सम्मेलन दो से चार नवंबर तक धनबाद के निकट डिगवाडीह में होगा। सम्मेलन का उद्घाटन दो नवंबर को प्रभात पटनायक करेंगे। अगले दिन 'वैचारिक वर्चस्व और सांस्कृतिक प्रतिरोध की दिशाएं' विषय पर संगोष्ठी होगी। संगोष्ठी में पी साईनाथ, विष्णु खरे, मैनेजर पांडेय, खगेंद्र ठाकुर, मैत्रेयी पुष्पा, लीलाधर मंडलोई, राजेश जोशी, रवि भूषण, हेतु भारद्वाज और हृषिकेश सुलभ को मुख्य वक्ता के तौर पर आमंत्रित किया गया है।

डिगवाडीह के 'इंडियन सेंटर फॉर माइनिंग एंड फ्यूल रिसर्च' के परिसर में हो रहे इस सम्मेलन के तीसरे दिन सांगठनिक सत्र में राज्यों की गतिविधियों और वहां के सांस्कृतिक परिदृश्य पर चर्चा होगी। बाद में नए पदाधिकारियों, केंद्रीय कार्यकारिणी और केंद्रीय परिषद का चुनाव होगा। जलेस के राष्ट्रीय महासचिव मुरली मनोहर प्रसाद सिंह ने बताया कि शासक वर्ग क्योंकि एटमी करार और विकास के मॉडल को लेकर अमेरिका परस्त विचारधारा के तहत पूरे देश के जनमत को मीडिया की मदद से मोड़ने की कोशिश कर रहा है, इसलिए इस बात पर भी संगोष्ठी में चर्चा होगी कि वैचारिक वर्चस्व की इस कोशिश के खिलाफ संस्कृतिकर्मी सृजनात्मक रूप में क्या कर सकते हैं।

प्रेम, विश्वास व भाईचारे की कमी से बढ़ रहा है अवसाद

नई दिल्ली, 9 अक्तूबर (भाषा)। सहिष्णुता, प्रेम, आपसी विश्वास और भाईचारे में तेजी से आ रही कमी और अति महत्वाकांक्षी होने की तेजी से बढ़ रही प्रवृत्ति के कारण मानसिक अवसाद के मामले बढ़ रहे हैं। डब्लूएचओ की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया भर में हर साल की तरह बुधवार को 'विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस' मनाया जा रहा है। इसका मकसद तेजी से बढ़ रहे मानसिक अवसाद के प्रति लोगों को जागरूक करना है। इस साल मानसिक स्वास्थ्य दिवस का मुख्य विषय 'बदलते विश्व में मानसिक स्वास्थ्य-संस्कृति और विविधता का प्रभाव' है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि हम सांस्कृतिक रूप से एक दूसरे से जुड़ी दुनिया में रहते हैं जहां हर 35 में से एक व्यक्ति अंतरराष्ट्रीय प्रवासी है। एक ही देश में भिन्न भाषाएं, धर्म और संस्कृतियों का सहअस्तित्व है। यह सांस्कृतिक विविधता मानसिक स्वास्थ्य के कई पहलुओं पर असर डाल सकती है। डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल में मनोरोग विभाग की प्रमुख डा. स्मिता एन देशपांडे ने बताया कि समय के साथ आपसी विश्वास और भाईचारे में तेजी से आ रहे बदलाव और आपसी रिश्तों में बढ़ती दूरियों के कारण मानसिक अवसाद के रोगियों में बढ़ोतरी हो रही है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दुनिया के सभी देशों से अपने यहां मनोरोग सेवाएं बढ़ाने की अपील करते हुए कहा कि हर साल मानसिक अवसाद रोगियों की संख्या बढ़ रही है। पर इसमें आधे रोगियों को भी इलाज मुहैया नहीं हो पा रहा है। रिपोर्ट में कहा गया है कि दुनिया भर में मानसिक अवसाद से मामूली या मध्यम रूप से प्रभावित ज्यादातर रोगियों को इलाज की सुविधा नहीं मिल पा रही है। अधिकांश देशों की हालत ऐसी है कि रोगी वहां उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाओं का भी फायदा नहीं उठा पाते। इसकी मुख्य वजह यह है कि ज्यादातर समाजों या संस्कृतियों में मानसिक बीमारियों को एक कलंक के तौर पर देखा जाता है।

डा. देशपांडे की राय में मौजूदा दौर में लोग अति महत्वाकांक्षी और बहुत ज्यादा उम्मीदें रखने वाले बनते जा रहे हैं। उम्मीदें पूरी न होने पर ये अवसाद, चिंता और तनाव के शिकार हो जाते हैं जिसका उनके स्वास्थ्य पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से असर पड़ता है। आम तौर पर लोग इसे गंभीरता से नहीं लेते। स्थिति बहुत खराब होने के बाद ही वे डाक्टर के पास पहुंचते हैं। एक सवाल के जवाब में उन्होंने बताया कि पहले संयुक्त परिवार होते थे जहां हर सदस्य एक दूसरे के सुख-दुख में शरीक होते थे और हर तरह से मदद के लिए तैयार रहते थे। आपस में बहुत ही प्यार और सहिष्णुता थी लेकिन अब इसमें तेजी से बदलाव आ रहा है जिसका सीधा असर सेहत पर पड़ रहा है।